IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

राजकमल चौधरीक मैथिली कथा-साहित्यमे सामाजिक चेतना

अरुण कुमार ठाकुर
शोधार्थी
विश्वविद्यालय मैथिली विभाग
ल. ना. मि. वि., दरभंगा

डा० सुरेन्द्र भारद्वाज
शोध-निर्देशक
सहायक प्राध्यापक
मैथिली विभाग
चन्द्रधारी मिथिला महाविद्यालय, दरभंगा
ल. ना. मि. वि., दरभंगा

सारांश

राजकमल चौधरी साहित्यरुपी दर्पणमे समाजक वास्तविकताक चित्रण कएलनि अछि। हिनक कथाकेँ बुझबाक लेल सबसँ पहिने एहि बातक ज्ञान होएबाक चाही जे समाजक परिधि ओतहि धरि सीमित नहि अछि, जतए धरि हमर दृष्टि जाइत अछि। भिन्न-भिन्न समाजमे व्यक्तिक कोटि सेहो भिन्न-भिन्न होइत अछि। एहन-एहन घटना घटित होइछ, जकर कल्पनो नहि कएल जाए सकैछ। कटु-आलोचनाकेँ सहैत राजकमल चौधरी अपन मैथिली कथाक लेल समाजक तहमे नुकायल विद्रूप-वीभत्स घटनाक चयन कएलनि। हिनक मैथिली कथा-साहित्य तत्कालीन मिथिलाक वास्तविक छवि प्रस्तुत कएलक अछि। हिनक रचनाक विषय-वस्तु, समाज आ ओहि समाजसँ प्रभावित होइत व्यक्तिगत जीवन रहल अछि। तत्कालीन समाजक भ्रष्ट राजनीतिक तंत्र, कुशासन, न्याय, दलित-शोषण, स्त्री-शोषण एवं अवसरवादीक प्रति विरोधक स्वर राजकमल चौधरीक कथा-साहित्यमे स्पष्ट रुपसँ देखबामे अबैत अछि।

बीज शब्द : कथा-साहित्य, विषय-वस्तु, विद्रूप-वीभत्स, स्त्री-चेतना, दलित-चेतना, बहु-विवाह।

प्रस्तावना :

साहित्यक कोनो विधामे समाजक वास्तविक रुप स्पष्टतः देखबामे अबैत अछि, संगहि एहि माध्यमसँ समाजकेँ अपन यथार्थसँ परिचित कराओल जाइत अछि। जखन समाजमे कोनो घटना-घटित होइत अछि, तँ ओकर प्रतिरोधक स्वर साहित्यमे स्पष्ट रुपसँ देखबामे अबैत अछि। मनुष्य चिन्तनशील प्राणी थिक। ओ जाहि समाजक बीचमे रहैत अछि, ओहिसँ प्रभावित होएबाक संग-संग ओ समाजहुकेँ प्रभावित करैत अछि। समाजक अवलोकन करैत ओकर नीक आ बेजाएक अनुभव करैत अछि। ई एकटा पारस्परिक संबंधकेँ जन्म दैत अछि, जे एक-दोसराक पूरक तँ होइत अछि, मुदा साहित्य समाजक आलोचकक कार्य सेहो करैत अछि। साहित्यकार बौद्धिक स्तरपर निष्कर्ष निकालैत छथि, जे समाज केहन होएबाक चाही? एहि प्रश्नक उत्तर ओ साहित्येक माध्यमसँ दैत छथि।

साहित्यक अध्ययन सेहो हमरा लोकनिकेँ समाज आ मनुष्यक सामाजिक स्थितिसँ अवगत करबैत अछि। राजकमल चौधरी साठोत्तरी कालावधिक साहित्यकार छथि। इएह समयमे भारतक इतिहासमे सबसँ बेसी उथल-पुथलक समय रहल अछि। कोनो देशक आम जनमानसक जीवनपर ओहि देशक राजनीतिक प्रभाव सेहो पड़ैत अछि। जखन देश आजाद होइत छैक, तखन देशक नवनिर्माणक लेल आम जनमानसकेँ अपन राजनेतासँ अपेक्षा रहैत अछि। मुदा भारतमे स्वतंत्रताक पश्चात्क राजनीतिक परिस्थिति देशवासीक मोनमे क्षोभ आ झुंझलाहट उत्पन्न करैत अछि। एहि तकलीफकेँ राजकमल चौधरी आम जनमानसकेँ आवाज बनाए अपन रचनाकर्ममे जनवादी भावनासँ ओत-प्रोत कएलनि अछि।

राजकमल चौधरी अपन विभिन्न कथामे व्यक्तिक क्षोभ, झुंझलाहट, संत्रास, कुंठा, टीस, पीड़ा आदि सभक वर्णन कएलनि अछि। समाजमे व्याप्त शोषण, दमन, उत्पीड़न, अन्याय, अत्याचार, भ्रष्टाचार आदि सभ लोकक व्यक्तिगत जीवनक विभिन्न पहलूकेँ अपन कथा-साहित्यक विषय बनाओल। हिनक कथा-साहित्यमे तत्कालीन समाजेक परिवेशगत घटनाक वर्णन भेटैत अछि। हिनक रचनाक मूल आधारे इएह थिक- सामाजिक चिंता, सत्य, न्याय आ स्वतंत्रताक लेल संघर्ष करैत शोषितक प्रति संवेदना। हिनक रचनामे विषय-वस्तुक विविधता समाजपर जे मजगूत पकड़ अछि, तकर उजागर करैत अछि।

राजकमल चौधरीक समस्त मैथिली कथा-साहित्य ग्रामीणक माटि-पानिसँ जुड़ल अछि। हिनक हिन्दी कथा-साहित्य महानगरी परिवेशमे स्त्रीक जीवनपर आधारित अछि, तँ मैथिली कथा-साहित्य मूलतः ग्रामीण जीवनसँ जुड़ल अछि। मुदा मैथिली कथा-साहित्यमे स्त्री-चित्रण एकदम अलग अछि। हिन्दी कथा-साहित्यमे स्त्री स्वच्छन्द आ शहरी परिवेशक अनुरुप आचरण करैत देखबामे अबैत अछि, जखन कि मैथिली कथा-साहित्यमे स्त्रीक व्यवहार ग्रामीण अंचलक अनुरुप अछि। ग्रामीण समाजक अपन एकटा अलग विशिश्टता होइत अछि। राजकमल चौधरीक अपन कथा-साहित्यमे सामाजिक चेतनाक विभिन्न कर्तव्यक निर्वाह करैत छथि।

अनमेल विवाह :

मैथिली कथा-साहित्य मध्य राजकमल अनमेल विवाह आ बहुविवाहक मुद्दा प्रखर रुपसँ व्यक्त कएलनि अछि। लेखक एहि प्रथाकेँ मिथिलांचलक कुसंस्कार माननलि अछि। 'आदिकथा' उपन्यासमे बहुविवाह आ अनमेल विवाहक दुखद परिणामक चित्र भेटैत अछि। लेखक समाजक समक्ष चित्रकेँ उपस्थापित कए पाठककेँ स्वयं एहि पर विचार करबाक लेल छोड़लनि। सुशीलाक अनिरुद्ध बाबूसँ बेमेल विवाह होइत अछि। धनी व्यक्ति धनक अहंकारमे कतेको विवाह करैत अछि। ओकरा कियो नहि रोकयवला रहैछ। अनिरुद्ध बाबूक दुनू पत्नी अपन पुत्रक संग ओहि घरमे रहैत छथि, मुदा ओ अपन बेटाक छोट बयसक लड़कीकेँ तेसर पत्नी बना लैत छथि। ओ भोजन करबाकाल समय केवल सुशीलाकेँ अपना लग बैसा लैत छथि। यद्यपि वृद्ध भेलाक बाद ओ जखन सुशीलाकेँ देखैत छथि, तँ चिंतित भए जाइत छथि। एहि अनमेल विवाहक दुष्परिणाम इएह होइछ जे पतिक सम्पत्ति हुनक पहिल दुनू पत्नीसँ जनमल दुनू पुत्रमे बाँट-बखरा भए जाइत अछि। हुनका मात्र ज्येष्ठ पुत्र कुलानन्दक संरक्षण भेटैत अछि। देवकान्त जे अनिरुद्धक बहिनक बेटा छथि, से सुशीलासँ प्रेम करैत छथि। ओ विधवा सुशीलाकेँ अपने लग राखए लेल चाहैत छथि, मुदा ओ हुनका संग नहि रहैत छथि। सामाजिक मर्यादाक दुहाई दैत कष्ट सहन करैत छथि। पतिक जीवित रहैत ओ देवकान्तसँ नुका कए प्रेम करैत रहैत छलीह, मुदा पतिक मृत्युक बाद समाजक रीतिक दबाव रहैत अछि। ओ विधवाक लेल समाज द्वारा निर्धारित आचरणकेँ जीवनमे अपनाबैत छथि। लेखक एहि मार्मिक प्रसंगक माध्यमसँ समाजक समक्ष प्रश्न ठाढ़ कएलनि अछि। से द्रष्टव्य अछि- ''असाधारण घटना अछि- धर्मपुरवाली, अर्थात् सुशीला देवी आ देवकान्त बाबूक मौन स्नेह। मामा आ भगिनामे स्नेह नहि हो, ई कोनो शास्त्र मे नहि लिखल अछि, बल्कि जेना माँ-बेटा, भाउज-दिओर, पिती-भातिजक स्नेह होइत अछि, वात्सल्यपूर्ण, मातृत्वपूर्ण, पवित्रतम आ उदार, प्रेरणादायक आ उत्साहवर्धक, एहने प्रेम मामी-भागिनक किएक नहि होयत? किंतु जेना कोनो तीक्ष्णदन्त पुष्पकीट हर समय देवकान्तक हृदय केँ शनैः शनैः काटि रहल अछि। एकर कोन उपाय?...''[1]

तत्पश्चात् 'एकटा चम्पाकली: एकटा विषधर'मे मायकेँ स्वयं अपन पुत्रीक लेल विषधर बनैतकेँ चित्रण कएल गेल अछि। ई तँ हमरा बुझने अज्ञानताक परिचायक थिक। माय अपन तेरह वर्षक पुत्रीक विवाह साठि वर्षक वृद्धसँ कराए प्रसन्न होइत छथि। सामंती समाजमे ई संभव थिक। शशि बाबू दक्षिणबरिया टोलक सबसँ प्रसिद्ध व्यक्ति छथि। अपार धन-संपत्तिक अधिकारी छथि। ''शशि बाबू चम्पासँ विवाह कऽ लिअऽ - ई दशरथ झा आ रामगंजवालीक उद्देश्य छनि। ई योजना स्वयं रामगंजवाली बनोलनि। साठि सालक सुन्दर, स्वस्थ, पराक्रमी वृद्ध शशि बाबू तेरह सालक आत्ममुग्ध, लज्जामयी, स्पर्शहीन, नवीन चम्पा कलीसँ शादी कऽ लेब, तँ शशि बाबूक सम्पूर्ण राजकाज, सम्पूर्ण धन-सम्पत्ति पर रामगंजवालीक आ दशरथक पंजीकृत अधिकार अर्थात् एकाधिकार भऽ जयतैक। आ महारानी जेना वृद्ध शशि बाबूक संसारमे पटरानी जकाँ राज करतथि हमर चम्पा, हमर चम्पा कली।''[2]

विधिक ई केहन विधान अछि, जे एहि सामाजिक घटनामे शशि बाबू विषधर नहि छथि, विषधर छथि- चम्पाक माय रामगंजवाली। विचारणीय जे जखन माये विषधर भए जाइ तँ बेटीक स्थिति समाजमे दयनीय होएब स्वाभाविके अछि।

'ललका पाग' कथामे लेखकक दृष्टि बहु-विवाह प्रथा पर पड़लनि। ई कथा वर्ष 1955 मे वैदेही पत्रिकामे प्रकाशित भेलनि। कथाक नायिका त्रिपुरा (तिरु) एकटा नारी छथि जकरा पर भिन्न-भिन्न तरहक आरोप लगा कए, हिनकर पतिकेँ दोसर विवाहक लेल तैयार होएबा पर हुनका सोझामे मेमिआइत नहि छथि आ न हुनका दोसर विवाहक लेल रोकैत छथि। त्रिपुराक विरोध नहि करबाक पाछा एकर तर्क छलनि

जे समाजमे बहु-विवाहक परम्परा अछि। ओ कहैत छथि- ‘‘जे हेतै, नीके होयत। अहाँक कुलमे दू टा विवाह लिखले अछि। हमरा किएक दुख होयत?’’[3]

एहिठाम ध्यान देबाक योग्य बात अछि जे कुलमे दू टा विवाह लिखले अछि अर्थात् रीतिक तरह चलएवला कुसंस्कार अछि। लेखक बड़ सहजतासँ समाजकेँ दर्पण देखौलनि अछि। राजकमल चौधरीक रचनामे एक विशेषता अछि जे हिनक स्त्री चरित्र विषम परिस्थितिमे सेहो जीवन-यापनक बाटक चयन कए लैत अछि। वस्तुतः त्रिपुराक त्याग बहु-विवाहक समर्थन नहि छलनि। ओ समाजसँ प्रश्न करैत अछि। लेखकक कथा-साहित्यमे निहित सामाजिक चेतनाक प्रभाव अछि जे एक वर्ग हुनक पक्षमे तँ एक वर्ग हुनक विपक्षमे ठाढ़ होइत अछि।

दलित जीवन :

सामाजिक घटनाकेँ वास्तविकतासँ अवगत साहित्यक माध्यमेसँ कएल जाइत रहल अछि। राजकमल चौधरीक मैथिली कथा-साहित्यमे ग्रामीण समाजमे पसरल रुढ़ि वर्ण व्यवस्थाक कथा प्रस्तुत अछि। अपन लेखनीक माध्यमसँ ओ भारतक बिहार राज्यक मिथिला दलित पर भए रहल घोर अन्यायकेँ स्वर प्रदान कएलनि अछि।

राजकमल चौधरी मैथिली कथा-साहित्यमे दलितक जीवनक वास्तविकताकेँ परत दर परत उघाड़ि देलनि अछि। समाजक शोषक वर्गक अधर्मिता पर कटाक्ष कएलनि अछि। ‘पाथर फूल’ उपन्यासमे बउका धानुकक नवविवाहितकेँ दलित स्त्री होएबाक कीमत चुकाबऽ पड़लैक। ‘‘जनकपुरवाली गाममे बदनाम अछि। सभ ओकरा कुलटा, वेश्या, डायन, राक्षसी, कहैत अछि। मुदा बीस वर्ष पहिने ओ बउका धानुकसँ सगाई कऽ कऽ शान्तिपुर अयलि, तँ गामक जमींदार, फूलबाबूक पिता, महानन्द बाबूक जीहसँ पानि आबए लगैत छनि। अपन परम प्रिय मित्र, रामजी झा केँ विवश कए देलनि, मित्र आइ राति बउकाक नवविवाहिता कनियाँ केँ हमर बिछाओन पर नहि लायब तँ हमरा चैन नहि भेटत।’’[4]

कथा ‘सती धनुकाइन’मे सतीक माध्यमसँ लेखक समाजक नकाबपोश बुद्धिजीविक मनमे अछूत स्त्रीक प्रति उत्पन्न मदतिक भाव पर व्यंग्य कएलनि अछि। ‘’मुड़ि कऽ सती मुस्काइत। बाजल, छोटे मालिक, हम एहि गामक बहु नहि, बेटी छी। ओना तँ छोट जातिक बहु सभक भाउज होइत अछि, मुदा हम तँ अहाँक बहिन लागब। लेकिन एहिसँ कि अहाँ साफ-साफ कहूँ...’’[5]

स्त्री जीवन :

राजकमल चौधरीक कथा-साहित्यमे देखल जाइत अछि जे स्त्रीये स्त्रीक जीवनकेँ बर्बाद करैत अछि। ‘आदिकथा’ उपन्यासक गुलाब दाइ सुशीलाक सतौत बेटी अछि। ओ सतमायक रुप-रंगसँ ईर्ष्या करैत अछि। ओ हुनका बदनाम करबाक कोनो उपाय नहि छोड़ैत छथि। जवान सुशीला, देवकान्तकेँ शरबत पीबाक लेल जिद्द करैत अछि। तखने गुलाब दाइ आबि जाइत अछि। ओ कहैत अछि- ‘‘गे माय! एहन बिजुरी! छह हाथक मर्दक देह सँ सटिकऽ शरबत पिबैत रहैत छलीह, एहि बातक तऽ लाज नहि अछि उल्टे लोटा-गिलास फोड़ि रहल छी।’’[6]

एहन अनेक घटना परिवारमे राति-दिन होइत रहैत अछि। एक स्त्री समाजक सर्वनाश करैत रहैत छथि। राजकमल चौधरी मैथिली कथा-साहित्यमे स्त्री-जीवनक वर्णन तत्कालीन स्त्रीक वास्तविक जिनगीसँ कए कएलनि अछि। एहि तरहेँ अपन विभिन्न रचनाकर्मक माध्यमसँ स्त्रीकेँ चेतनाक धरातलपर जागृत करबाक प्रयास कएलनि।

निष्कर्ष :

राजकमल चौधरी समाजक नियतिक अवलोकनकर्ता छलाह, ओ परिवर्तनक पक्षधर सेहो रहलाह। अपन रचनाक माध्यमसँ स्पष्ट कएलनि अछि जे व्यक्ति पर समाजक प्रभाव पड़ब स्वाभाविक अछि, एहि लेल समाजमे सकारात्मक परिवर्तन होएब एकटा समाज लेल आवश्यक अछि। हिनक समस्त कथा-साहित्य समाजमे चेतनाक प्रसार करैत अछि।

संदर्भ-स्त्रोत :

1. नवीन,देवशंकर (सं.) आदिकथा, राजकमल चौधरी रचनावली (खण्ड-5), राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण-2016, पृ० 89.

2. नवीन,देवशंकर (सं.) एकटा चम्पाकली: एकटा विषधर, राजकमल चौधरी रचनावली (खण्ड-4), राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण-2016, पृ० 446.

3. नवीन,देवशंकर (सं.) ललका पाग, राजकमल चौधरी रचनावली (खण्ड-4), राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण-2016, पृ० 250.

4. नवीन,देवशंकर (सं.) पाथर फूल, राजकमल चौधरी रचनावली (खण्ड-5), राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण-2016, पृ० 125.

5. नवीन,देवशंकर (सं.) सती धनुकाइन, राजकमल चौधरी रचनावली (खण्ड-4), राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण-2016, पृ० 289.

6. नवीन,देवशंकर (सं.) आदिकथा, राजकमल चौधरी रचनावली (खण्ड-5), राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण-2016, पृ० 99.